संघ का लक्ष्य जागृत हिन्दुवादी समाज - माननीय मोहनराव भागवत

बिलासपुर, १४ दिसम्बर २०११ : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य समाज में स्वयं को बलिष्ठ कर कोई अलग व्यवस्था का निर्माण नहीं करना है बल्कि हिन्दू समाज में व्यापत अच्छाईयों को उभार कर समाज को बलवान और जागृत करना है। यह बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत ने बुधवार को बिलासपुर के राजकीय छात्र वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला मैदान में स्वयंसेवकों और नागरिकों को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि संघ का काम संघ के नाम को बड़ा करना नहीं बल्कि देश और समाज को बड़ा करना है। समाज में ऐसे बहुत से लोग हैं जो इस विचार से सहमत हैं किन्तु अभी तक संघ के साथ जुड़ कर देश हित के लिए काम नहीं कर पाए हैं। उन्होंने ऐसे लोगों से आह्वान किया कि वह संघ के साथ जुड़ कर काम करें।

भागवत जी ने कहा कि आए दिन विभिन्न प्रचार माध्यमों से जानकारी मिलती है कि विश्व ने विज्ञान में उन्नति कर कुछ सुविधाएं तो जुटा ली हैं, किन्तु विज्ञान के मूल उद्देश्य शांति और कष्टों से मुक्ति को अभी तक प्राप्त नहीं कर पाया है। जिसका मुख्य कारण विज्ञान में एकाधिकार और अहंकारी विचार का होना है। जबकि भारत की विज्ञान बारे सोच अहंकार और एकाधिकार से कौसों दूर है। इस लिए पूरा विश्व चाहता है कि भारत उभरे।

यहां तक की विचारकों और ज्ञानवान लोगों का मानना है कि वर्ष २०२० तक भारत एक बार फिर विश्व की महान शक्ति बन कर उभरेगा और नेतृत्व करेगा। इसके विपरीत भारत वर्तमान में स्वयं ही अनेक समस्याओं से ग्रसित है। पाकिस्तान निरन्तर परेशान करता रहता है, चीन चारों ओर से भारत पर युद्ध का दवाब बनाए हुए है, भ्रष्टाचार के कई प्रकरण उभर कर सामने आ रहे हैं। भ्रष्टाचारियों के खिलाफ कार्रवाई करने पर सरकार में सहमति तक नहीं बन पा रही है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के नाम पर भारत के खुदरा व्यापार को खतरे में ला दिया है। यदि यह व्यवस्था देश में बनती है तो भारत का खुदरा व्यापारी कहीं का नहीं रहेगा। देश में बेरोजगारी बढेगी, भारत का धन विदेश में जायेगा। आज वही लोग यह व्यवस्था देश में लाने के लिए आमादा हैं जो वर्ष २००१ में इसका विरोध करते नजर आ रहे थे। यह आर्थिक नीतियां किसके दबाब में चल रही हैं यह समझ से परे है।

साम्प्रदायिक एवं लक्षित हिंसा रोकथाम विधेयक-२०११ की चर्चा करते हुए श्री भागवत जी ने कहा कि यह विधेयक स्वयं साम्प्रदायिकता एवं लक्षित हिंसा करता नजर आता है। यह काला कानून न्यायशास्त्र(संविधान) तक को चुनौति देता नजर आता है। विधेयक बहुसंख्यक हिन्दू समाज को उपद्रवी करार देता है। जबकि इतिहास में ऐसा कोई उपद्रव भारत में नहीं हुआ जो बहुसंख्यकों (हिन्दुओं) ने शुरू किया हो। विधेयक

यदि कानून बनता है तो प्रशासन न केवल इसके समक्ष कठपुतली होगा बल्कि यह राज्य की निर्वाचित सरकारों को मामूली घटनाओं के आधार पर बर्खास्त करने का अधिकार केन्द्र सरकार को देता है। इतने भयंकर प्रावधानों वाला विधेयक होने तथा अधिकतर राज्य सरकारों के विरोध के बावजूद मौजूदा प्रधानमंत्री विधेयक निरस्त न करके उसको नई शक्ल में लाने के लिए आमादा हैं जो सीधे तौर पर वोट आधारित राजनीति को उजागर करता है।

भागवत जी ने कहा कि देश में इसी तरह प्रांत, भाषा, नदियों सहित विभिन्न विषयों को लेकर आपसी विरोध हैं। उन्होंने कहा कि हमने पाया है कि उपरोक्त सभी परिस्थितियों से उबरने के लिए राजनीति, सरकारें और नेताओं का परिवर्तन करके भी हमें सफलता नहीं मिल पायी है। जो इन तरीकों को नकारा साबित करता है। उन्होंने कहा कि बावजूद उसके राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मानता है कि भारत उभरेगा और विश्व का नेतृत्व करेगा। जरूरत मात्र यह है कि देश की हिन्दुवादी मूल सोच को उभार कर लाया जाए। हिन्दुत्व के प्रति आशावान, निष्ठावान लोग जागरूक हों। ऐसी स्थिति में राजनीति समाज से ऊपर नहीं हो सकेगी, उस पर हावी नहीं हो सकेगी। शुद्ध हिन्दुत्ववादी लोग जब जागरूक होंगे तो वह भारत को विश्व कल्याण की ओर अग्रसर करेंगे। हिन्दुवादी सोच ही ऐसी है जो अलग-अलग मतों में भी विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। इसलिए विश्व हमारी ओर आशा भरी नजरों से देख रहा है। उन्होंने कहा कि हर भारतीय को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ना चाहिए। उसके साथ काम करना चाहिए या फिर उसके द्वारा मिले मार्गदर्शन के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करना चाहिए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य संघ का विकास नहीं बल्कि हिन्दुवादी सोच से समाज और विश्व का विकास करना है। इसी सोच से १९२५ में कई वर्षों के अनुभव और शोध के बाद डॉ. हेडगेवार जी ने संघ की स्थापना की। उसी विचार के साथ आज भी संघ व्यक्ति निर्माण के कार्य में लगा है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष ब्रिगेडियर (से.नि.) जगदीश सिंह वर्मा ने कहा कि मैं संघ का सक्रिय सदस्य नहीं हूं पर संघ के लिए मेरे दिल में सम्मान है। संघ स्वयं प्रेरणा और निःस्वार्थ भावना से कार्य कर रहा है। राष्ट्रहित में किया गया कोई भी कार्य सर्वोपरि है। उन्होने राष्ट्रीय संकटों के अवसर पर स्वयंसेवकों द्वारा स्वप्रेरणा से किए गए कार्यों की प्रशंसा की। उन्होने कहा कि असंभव को संभव बनाना स्वयंसेवक बखूबी जानते हैं। भ्रष्टाचार को सबसे बड़ा दुश्मन बताते हुए उन्होने कहा कि इस महामारी से बचते हुए इसके उपाय भी खोजने होंगे। इस अवसर पर क्षेत्र संघचालक मा. बजरंग लाल जी, क्षेत्र प्रचारक श्री रामेश्वर जी, क्षेत्र सेवा प्रमुख श्री श्रीनिवास मूर्ति जी, क्षेत्र प्रचार प्रमुख श्री नरेन्द्र कुमार, प्रान्त संघचालक कर्नल (से.नि.) रूप चन्द जी, प्रान्त प्रचारक श्री बनवीर जी, मुख्यमन्त्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल जी सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। इस अवसर पर स्वयंसेवकों ने व्यायाम योग, दण्ड योग और सूर्य नमस्कार का सामूहिक प्रदर्शन भी किया। इससे पूर्व प्रदेश के सात जिलों से आए हजारों स्वयंसेवकों ने बिलासपुर नगर में तीन स्थानों से भव्य पथसंचलन निकाला जिसका शहर वासियों ने जोरदार स्वागत किया।

चित्र कैप्शन

१. १२८४ मंच पर डॉ. बजरंग लाल जी, मा. भागवत जी, ब्रिगेडियर जगदीश वर्मा जी, प्रांत संघचालक श्री रूप चन्द जी।